M.A. I - Sem II

History CC-5

History of women study

भारतीय स्वतंत्रता आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाएं एक हाथ में निष्क्रिय विरोध (सत्याग्रह) का हथियार और दूसरे हाथ में मतदान का अधिकार लिए तीव्र गति से प्रवेश की। विभिन्न कार्यक्रमों में प्रतिबद्धता पूर्वक भाग लेती रही। प्राक् ब्रिटिश काल में सुल्ताना रजिया बेगम, चांद बीबी, नूरजहाँ, अहिल्याबाई होल्कर जैसी कुछ अभिजातीय स्त्रियों के अतिरिक्त अन्य स्त्रियाँ राजनीति में भाग नहीं ली थीं। ब्रिटिश शासन काल में स्थिति बदली, उन्होंने उत्साहपूर्वक सीमित मताधिकार का इस्तेमाल किया तथा भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा चलाए गए जन-आन्दोलनों में भी भाग लिया।

सन् 1900 ई० में पहली बार कांग्रेस अधिवेशन में भाग लिया। 1905 ई० के बंगाल - विभाजन के अवसर पर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध आंदोलन का संचालन किया तथा 1911 ई० में अंग्रेजी सरकार को बंगाल विभाजन के आदेश को वापस करने को बाध्य किया।

सन् 1920-22 में हुए असहयोग आन्दोलन में बड़ी संख्या में जुड़कर अपना समर्थन दिया। उन्होंने स्वदेशी आन्दोलन को जन आंदोलन का रूप देने में सक्रिय भूमिका निभाई। वे शराब की दुकानों पर धरना देती थीं। लाठी, गोलियों का सामना करते हुए जेल जाती थीं।

Scanned with CamScanner

M.A. Sem-II

1921 ई० में महिलाओं ने राष्ट्रीय स्त्री सभा का गठन किया। इसका प्रमुख उद्देश्य था - स्वराज्य लेना तथा महिलाओं का उद्धार एवं उत्थान करना।

1925 ई० में उन्होंने प्रिंस ऑफ वेल्स की भारत-यात्रा के विरोध में पूरे बम्बई शहर में हड़ताल ~~[illegible]~~ किया।

1930 ई० के सविनय ~~अव~~ अवज्ञा आन्दोलन में इनकी भागीदारी से एक नवीन चरण का सूत्रपात हुआ। डांडी यात्रा में भी अग्रणी भूमिका अदा की। गांधी जी डांडी पहुंचने के बाद महिलाओं का एक सम्मेलन बुलाया। महिलाओं को स्वदेशी के प्रचार और मद्यपान की दुकानों पर धरना देने का दायित्व सौंपा गया।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में हर स्तर की महिलाओं की भागीदारी रही। सक्रिय रूप से भाग लेने वाली महिलाओं में कमलादेवी चट्टोपाध्याय, ऐनी बेसेंट, सरोजिनी नायडू और मार्गरेट कजिंस थीं।

सरकारी अधिकारियों द्वारा व्यक्ति की संपत्ति को नीलाम करने के विरुद्ध में वे आंदोलन चलाईं। ये संपत्ति कर और राजस्व में अनुपस्थिति से संबंध रखती थीं। इस आन्दोलन के दौरान पहली बार महिलाओं को पुलिस ~~दमन~~ दमन का शिकार होना पड़ा।

Scanned with CamScanner

M.A. I Sem-II

इसके बावजूद महिलाएं जुलूस का नेतृत्व करती थीं, सभाएं संचालित करती थीं, राष्ट्रीय गीत गाती थीं, चरखा कातती थीं और राजनैतिक चेतना का प्रसार करती थीं। 1930 के दशक में कई साम्यवादी महिलाओं ने भी आंदोलन का संचालन किया।

1942 ई० के भारत छोड़ो आन्दोलन में उन्होंने सक्रिय भूमिका निभाई। कई शीर्ष महिलाएं जिनमें अरुणा आसफ अली, सुचेता कृपालानी, उषा मेहता इत्यादि थी, अज्ञातवास में रहते हुए आन्दोलन का नेतृत्व करती रहीं। आंदोलन में नितांत सामान्य स्तर की महिलाओं की भी भूमिका अहम रही। महिलाएं धैर्यपूर्वक वन्देमातरम् का गीत गाती हुई पुलिस अत्याचारों का दृढ़ता से सामना करती थीं। इस आन्दोलन को गति देने में सर्वाधिक योगदान सरोजिनी नायडू, कमलादेवी चट्टोपाध्याय, स्वरूप रानी, राजकुमारी अमृत कौर आदि का रहा। लाला लाजपतराय की पत्नी श्रीमती राधा देवी ने भी इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया। इसके अलावे मोहिनी सहगल, चंद्रप्रभा सैकाती, पुष्पा मातंगिनी हाजरा, रजनी घोष आदि के नाम महत्वपूर्ण हैं।

राष्ट्रीय आंदोलन में महिलाएं

भारतीय क्रांतिकारी महिलाएं देश में ही नहीं, विदेशों में भी सक्रिय रहीं। उन्होंने सुभाषचंद्र बोस की महिला सेना में भर्ती होकर स्वतंत्रता संग्राम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान किया तथा अपने अदम्य साहस और असीमित शौर्य का अद्भुत प्रदर्शन किया।

इस प्रकार राष्ट्रीय आंदोलन की घटना ने भारतीय महिलाओं की साहस और अद्भुत क्षमता को विश्व के सम्मुख उपस्थित किया।

—— oo ——

Scanned with CamScanner